

18वीं शताब्दी में भारतीय समाज में महिलाओं की दशा

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतीय सामाजिक जीवन में महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उनमें स्थिति अज्ञानित विदुओं से स्पष्ट हो जाती है।

(1) समाज का पिछड़ा वर्ग -

मनुस्मृति के अनुसार स्त्रियों को समकक्ष है। अत्यंत धर्म शास्त्रों में इनके निम्न स्थान दिया गया। ब्राह्मण पुत्रों पर निर्भर रहने तथा उनसे नियंत्रण में बने रहने का निर्देश दिया गया। अठारहवीं शताब्दी व असीसवीं शताब्दी के पूर्व यह स्थिति और भी दयनीय हो गई थी।

(2) करीब व्यवस्था की कठोरता -

कैदिक काल में कर्षण के आधार पर निर्मित करीब व्यवस्था कालांतर में अधिकाधिक कठोर और जटिल होती गई। ज्योतिष (प्राधन्य, दक्षिण, वैश्या व कुट्ट) सामाजिक संरचना का आधार था। अतः इसका प्रभाव महिलाओं के समाज पर भी पड़ा।

(3) काल विवाह -

इस कृपण के कारण असाध्य में ही स्त्रियाँ विवाह होने लगीं तथा अधिक सन्तानोत्पत्ति के कारण स्वाल्प मिलने

का और उसकी असाधारण मूल्य होने
की वजह से बाल विवाह के कारण वे शाला
शुविवाहों से वैधित हो गईं।

4) बहुविवाह -

इस कुप्रथा से परिवार की
आर्थिक स्थिति काफी गिर गई। बहुविवाह
से अनैसर्गिक विवाहों की भी प्रोत्साहित
विधा जिसके कारण स्त्रियों का जीवन
अत्यंत कष्टमय हो गया।

5) विधवा - जीवन

विधवाओं को सामाजिक
कार्यों में आमोल-सूचक तथा परिवार में
अपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था। बाल-
विधवाओं को पुनर्विवाह की अनुमति नहीं थी,
आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करते हुए कष्टमय
जीवन व्यतीत करने के लिए विधवा विधा
जाता था। पतन स्वेच्छित तथा पति के मर
ने की उन्हे सम्पत्ति का अधिकार न होने
के कारण वे आर्थिक दृष्टि से पुरुषों पर
निर्भर रहती थीं। उन्हे आजीविका के लिए समर्पण
की भी अनुमति नहीं थी।

6) पर्दा - प्रथा -

मुसलमानों की प्रथा से हिन्दू
समाज की स्त्रियों में पर्दे की प्रथा प्रचलित
हो गई थी। पर्दा की प्रथा से समाज की

प्रतिष्ठा का सूचक माना जाता था। इस कुप्रथा का प्रभाव स्त्रियों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

7) कालिका-व्रत

कालिकाओं के जन्म होते ही कुछ जातियों ने उन्हें मार डालने की कुप्रथा प्रचलित हो गई जो समाज का कलंक स्वरूप थी। यह कुप्रथा विशेषतः ^{वामिक} ब्राह्मणों में प्रचलित थी। कुछ लोगों ने यह ^म अंधविश्वास का नि-कार कालिका की देवी देवता के समक्ष काल चढ़ाने से उन्हें पुत्र उत्पन्न होगा। इस अंधविश्वास से भी कालिकाओं का हत्या की जाती थी।

8) औरत

अठारवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ब्रिटिश शासकों ने भी स्त्री-शिक्षा का और कोई ध्यान नहीं रिया। ईस्ट इंडिया कंपनी ने महिलाओं को शिक्षित करना सेमवार इसलिए आवश्यक नहीं समझा कि उन्हें पुराणिक धर्म के लिए महिला कर्म या अधिकारियों का आवश्यकता नहीं थी।

9) सती प्रथा

अठारवीं शताब्दी की शुरुआत सती प्रथा का प्रचलन 19वीं शताब्दी के शुरुआत तक चलता रहा। यकापंतारड विलियम बेन्टिन ने 1929 ई० में कानून बनाकर

1. The first part of the paper is devoted to a general
discussion of the problem of the existence of
solutions of the system of equations
$$\frac{dx}{dt} = P(x, y, z, t),$$
$$\frac{dy}{dt} = Q(x, y, z, t),$$
$$\frac{dz}{dt} = R(x, y, z, t),$$
where P, Q, R are continuous functions of the variables x, y, z, t and satisfy the Lipschitz condition with respect to x, y, z . It is shown that under these conditions the system has a unique solution for any initial conditions $x(0) = x_0, y(0) = y_0, z(0) = z_0$ and for any t in the interval $0 \leq t \leq T$, where T is a certain positive number depending on the initial conditions and the functions P, Q, R .

2. -